शोध - प्रारूप

संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू के जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन

पीएच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

स्नातकोत्तर संताली विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष: 2024

शोध निर्देशक

(डॉ. अजीत मुण्डा)

सहायक प्राध्यापक

मुण्डारी विभाग

राम लखन सिंह यादव महाविद्यालय, राँची।

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधकर्ता

(दिव्या मुर्मू)

एम॰ए॰ संताली

यू॰जी॰सी॰ नेट/जे॰ आर॰ एफ॰ (संताली)

स्नातकोत्तर संताली विभाग,

राँची विश्वविद्यालय, राँची।

प्रस्तावना

झारखण्ड चारों ओर से पहाड़ों और जंगलों से घिरा हुआ प्रकृति की गोद में बसा एक मनोरम राज्य है। झारखण्ड का तात्पर्य है ''जंगलों का भूखंड''। यह क्षेत्र प्राकृतिक उपादनों से जितना भरा-पूरा है उतना ही अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा-साहित्य के लिए विख्यात है। झारखण्ड भारत का एक प्रमुख राज्य है। झारखण्ड राज्य में बहुत बड़ी संख्या में घने वन और झाड़-झंकार जैसी अधिकांश वनस्पतियाँ पाई जाती है। यह राज्य छोटानागपुर पठार पर बसा हुआ है। झारखण्ड का शाब्दिक अर्थ है- ''वन का क्षेत्र''। यह प्रदेश सघन वनों, नदी-नालों, झरनों एवं पर्वतों और पहाड़ों से आच्छादित होने के साथ-साथ अनेक खनिज सम्पदाओं से भरा पड़ा है। संपूर्ण झारखण्ड प्रदेश के जनजातियों की अपनी भाषा है, लोकगीत एवं नृत्य इनके जीवन के अभिन्न अंग है। संताल, मनमस्तिष्क से प्रकृति के सभी मधुर सौन्दर्य का उपयोग करते हैं। इनकी भाषा, साहित्य, संस्कृति व्यापक समृद्ध एवं रहस्यपूर्ण है। इस संबंध में संताली में एक उक्ति प्रचलित है -

''रोड़ गे रोड़ाक खान सेरेञ आर

ताड़ाम गे हिलावाक् खान एनेज् होयोक्आ।।''

अर्थात् बोलना ही गीत है तथा चलना ही नृत्य है।

संताली भाषा केवल झारखण्ड राज्य की प्रसिद्ध भाषा नहीं है, बल्कि इसका भाषिक क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है। संताली भाषा-भाषी का क्षेत्र बहुत विषाल है। यह भाषा झारखण्ड के अलावा पश्चिम बंगाल, उड़िसा, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, असम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैण्ड आदि में संताल जाति के लोगों द्वारा व्यवहृत होता है। संताली भाषा भारत के अन्य प्रांतों एवं विदेशों में भी बोली जाती है अर्थात् नेपाल, भूटान, बांग्लादेश आदि। यह भाषा उन 22 भाषाओं में से एक है जो भारतीय संविधान के आठवीं आनुसूची में सम्मिलित है। यह अनेक राज्यों में बोले जाने के कारण कई लिपियों में प्रयोग किया जाता है। जैसे-रोमन, देवनागरी, बांग्ला, उड़िया, असमी, ओलचिकि।

झारखण्ड की प्राचीनतम आस्ट्रिक भाषा परिवार का एक सदस्य संताली है, जो झारखण्ड की मान्यता प्राप्त नौ भाषाओं में से संताली एक प्रमुख स्थान रखती है। मान्यता प्राप्त ये नौ भाषाएँ हैंः- संताली, कँुडुख, मुण्डारी, हो, खड़िया, नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा तथा कुरमाली। उपर्युक्त भाषाओं में से प्रथम चार यानि संताली, मुण्डारी, हो तथा खाड़िया आॅस्ट्रिक भाषा परिवार की भाषाएँ है। जबकि कुँडुख भाषा अकेले ही द्रविड़ भाषा परिवार का प्रतिनिधित्व करती है। शेष चार आर्य भाषा परिवार का नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा एवं कुरमाली झारखण्ड की संपर्क भाषा के रूप में विद्‌यमान है और इसका व्यवहार झारखण्ड के प्रायः सभी लोग अपने विचारों के पारस्परिक आदान-प्रदान में आवश्यकतानुसार किया करते हैं।

साहित्य जगत में संताली भाषा का अपना अलग स्थान है। इस साहित्य के लोक साहित्य से इसका प्रमाण मिलता है, क्योंकि इसका लोक साहित्य बहुत ही सशक्त है। जिस भाषा साहित्य की लोक साहित्य जितनी सशक्त होती है, उस भाषा की शिष्ट साहित्य उतनी ही समृद्‌ध होती है, क्योंकि शिष्ट साहित्य की जननी लोक साहित्य है।

संताली भाषा के लिखित साहित्य का प्रारम्भ 17 वीं शताब्दी के आस-पास माना जा सकता है। सर्वप्रथम लिखित साहित्य का प्रारम्भ अंग्रेज ईसाई मिशनरियों के द्‌वारा हुआ है। जे. फिलिप्स ने ''ए संताली प्राईमर'' 1845 ई. में प्रकाशित किया। इसके बाद उन्होंने ''ए सेक्कूअल टू दा संताली प्राईमर 1850 ई. में प्रकाशित किया। ''एन इन्ट्रोडक्षन टू दा संताली लैंग्वेज'' 1852 ई. में प्रकाशित किया। इसके बाद ई. जी. मानू ने ''संथालिया एण्ड दा संथाल्स'' लन्दन से 1867 ई. में प्रकाशित किया। सन्‌ 1872 में ई. टी. डाल्टन ने ''डिस्क्रीप्टीव इथनोलोजी आॅफ बेंगाल'' में संताली भाषा सम्बन्धी ''दी कोलारियन्स'' में लिखा है। इसी प्रकार रेव ई. एल. पुक्सले ने - ''ए वोकाबुलारी आॅफ दा संताली लैंग्वेज'' लंदन से ''दा संताली लैंग्वेज'' बनारस से 1878 ई. में प्रकाशित करवाया। इसके पश्चत

रेव एल. ओ. स्क्रेप्सरूड ने ''ए ग्रामर आॅफ द संथाली लैंग्वेज'' बनारस से 1873 ई. में प्रकाशित करवाया।

संताली साहित्य जगत में कुछ ऐसे साहित्यकार हो गए जिनकी मात्र रचनाएँ रह गई और कुछ ऐसे साहित्यकार हैं जो लगातार अपनी सृजनात्मक लेखन साहित्य से संताली साहित्य को विकास के रास्ते पर ले जा रहे हैं। संताली भाषा-साहित्य में सबसे पहले माँझी रामदास टुडू 'रूसिका' लिखित ''खेरवाल बंशा धोरोम पुथी'' बंगला लिपि में, कलकाता वेदान्त प्रेस से 1882 में प्रकाशित हुई हैं। ''छोटराय देश माँझी रेयाः काथा'' पुस्तक रोमन लिपि में राया सोरेन द्वारा सन् 1917 ई. में प्रकाशित हुई। रोबेन रासेन किस्कू 'रापाज द्वारा सन् 1946 ई. में अंग्रेजी उपन्यास कार्सटियार्स रचित ''हाड़माज विलेज'' का संताली में अनुवाद कर ''हाड़माक आतु'' उपन्यास नाम से रोमन लिपि में प्रकाशित कराया। स्टेफन एच. मुर्मू, सोलेमन मुर्मू, पाउल जूझार सोरेन, पंडित रघुनाथ मुर्मू, पास्टर नुनकू सोरेन, गोरा चाँद टुडू, नारायण सोरेन 'तोड़सुताम', चुनकू राम टुडू, आदित्य मित्र 'संताली', नाथानियल मुर्मू, पद्मश्री भागवत मुर्मू 'ठाकुर', शारदा प्रसाद किस्कू 'खेबा', चित्तू टुडू 'टाईगार', ठाकुर प्रसाद मुर्मू, डामन हाँसदा, रूप नारायण टुडू 'श्याम', नुनुलाल हेम्ब्राम, बाल किशोर बास्की 'अरमान', प्रो0 दिगम्बर हाँसदा, बाबूलाल मुर्मू 'आदिवासी', तेजनारायण मुर्मू आदि ने संताली भाषा साहित्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिये हैं।

आधुनिक रचनाकारों में डाॅ0 स्टेनशिला हेम्ब्रम, दूरबीन सोरेन, कलेन्द्र नाथ माण्डी, प्रो0 बलराम टुडू, प्रो0 हरिहर हाँसदा, सारदा प्रसाद किस्कू 'खेबा', रबिलाल टुडू, श्याम बेसरा 'जिवीराड़ेच', लक्ष्मी नारायण मुर्मू, प्रो0 कारू माँझी, महादेव हाँसदा, रूपचाँद हाँसदा, यदुमनी बेसरा, श्रीमती यशोदा मुर्मू, यशोदा टुडू आदि संताली भाषा के साहित्य भण्डार को भर रहे हैं। संताली भाषा साहित्य के साहित्यकारों में एक विशिष्ट स्थान है- संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू जो अभी वर्तमान समय में आदिवासी शोध केन्द्र, संत जेवियर्स काॅलेज, मेन रोड, राँची में लेखक एवं शोध निर्देशक हैं। संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू पूर्व में स्नातकोत्तर जनजातीय

एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के विभागाध्यक्ष एवं निर्देशक रह चुके हैं तथा संताली भाषा साहित्य के प्रति राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपना योगदान दे रहे हैं। इनका जन्म 09 अप्रैल 1952 को झारखण्ड, पूर्वी सिंहभूम जिला के राजदोहा गाँव में हुआ है।

शोध विषय की प्रेरणा :-

झारखण्ड राज्य मेरा जन्मभूमि एवं कर्मभूमि है और बाल्यावस्था से ही संताली भाषा के प्रति लगाव रहा है। मातृभाषा संताली होने के कारण मैंने स्नातकोत्तर संताली भाषा से किया। इस दौरान मुझे संताली भाषा को और अधिक नजदीक से जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्नातकोत्तर के कालावधि में मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि क्यों ना अपनी मातृभाषा के लिए मैं अपना कुछ योगदान दूँ, क्योंकि अध्ययन काल के दौरान मुझे इस भाषा के सहायक पाठ्य-सामाग्रियों के बारे में जानने की जिज्ञासा और बढ़ती चली गई। सच में संताली भाषा, साहित्य, संस्कृति, जीवन-दर्शन, ध्वनि विज्ञान, न्यूरो लैंग्वेज, लैंग्वेज पैथोलोजी, साउंड एंड हेल्थ आदि पहलु वैज्ञानिकता से ओतप्रोत एवं रहस्यों से परिपूर्ण है।

स्ंाताली भाषा साहित्य में सहायक पाठ्य-सामाग्रियों के अध्ययन के दौरान मुझे एक ऐसे रचनाकार की रचनाएँ मिली, जो मुझे इस भाषा-साहित्य के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा उत्पन्न किया, वो रचनाकार है संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू। इनकी रचनाओं से मैं इतना प्रभावित हुई कि मुझे लगा की जब भी कभी मौका मिले तो, मैं इनके जीवन एवं साहित्य पर शोध कार्य करूँगी। इस विषय पर मैं अपने शोध निर्देशक से चर्चा की तो उन्होंने मुझे **"संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू के जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन"** विषय पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया, जिससे मुझमें एक नए उत्साह उत्पन्न हुआ। मेंरे गुरूजनों ने भी इस शोध कार्य के लिए मुझे प्रेरित किया।

शोध परिकल्पना :-

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान में परिकल्पना को एक स्तम्भ माना जा सकता है। जब तक मनुष्य के मन में चिंतन नहीं होगा किसी भी विषय वस्तु की कल्पना नहीं कर सकता है। ठीक उसी प्रकार मेरे मन में भी संताली भाषा के महान साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू के जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन का परिकल्पना किया। इनके साहित्य के विभिन्न विधाओं पर मैं आकृष्ट हुई। इस विषय पर शोध कार्य करने हेतु मेरा हृदय प्रेरित हुआ।

शोध विषय की औचित्य :-

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता जब तक की उसकी उपयोगिता समाज, प्रदेश एवं देश के लिए न हो।

शोध का उद्देश्य :-

1. संताली साहित्य का गहन अध्ययन करना।

2. सं्ाताली साहित्य को महत्व एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना साथ ही इनके संकलन, संचयन एवं मूल्यांकन की दिशाएँ प्रशस्त करना।

3. सं्ाताली साहित्य का मूर्द्धन्य साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू जी के जीवन एवं साहित्य के मध्यम से झारखण्डी जनजीवन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालना।

4. संताली भाषा साहित्य को सुदृढ़ करना।

5. झारखण्ड के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में योगदान देना।

शोध का महत्व:-

संताली भाषा और साहित्य के विकास में कृष्ण चन्द्र टुडू के जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन शोध से समाज में निम्नलिखित प्रभाव पड़ेगा -

1. इस शोध प्रबंध के प्रकाशन में आने से समस्त संताली भाषा-भाषियों एवं समाज में कवि कलाकारों और साहित्यकारों के प्रति सम्मान बढ़ेगा और जागृति की लहर आयेगी।

2. इसके समकालीन संताली भाषा-भाषियों को साहित्य समीक्षा पर शोध के लिए आर्दश साबित होगा।

3. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा एवं एक नयी जागृति उत्पन्न होगी।

4. अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

5. साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा।

6. इस शोध कार्य के प्रति भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

शोध प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध प्रबंध के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध विधियों का अनुशरण किया जाएगा-

1. अवलोकन विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. विश्लेषणात्मक अध्ययन
4. प्रश्नावली विधि

शोध सहायक उपकरण :-

1. मोबाईल
2. इंटरनेट
3. लैपटाॅप
4. रिकाॅर्डर
5. अन्य

पीएच० डी० शोध-प्रबंध की प्रस्तावित रूप-रेखा

शोध विषय:- संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू के जीवन एवं साहित्य: एक अध्ययन

प्रस्तावना

शोध विषय की प्रेरणा

औचित्य

शोध की विषय सीमा

शोध विधि

विषय से संबंधित पूर्व में किए गए शोध कार्यों का विवरण

प्रथम अध्याय :- संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू की जीवन रेखाएँ

1. जन्म, परिवार एवं पारिवारिक पृष्ठ-भूमि
2. बाल्यावस्था, किशोरावस्था एवं युवावस्था
3. शिक्षा
4. विवाह
5. सेवा
6. संताली की ओर झुकाव एवं प्रेरणा
7. विविध कार्य

द्‌वितीय अध्याय :- संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू की व्यक्तिगत विषेषताएँ

1. बाह्‌य विशेषताएँ

2. आंतरिक विशेषताएँ

(क) स्वाभिमानी

(ख) दृढ़निश्चयी

(ग) संवेदनशील

(घ) न्यायप्रिय एवं कर्तव्य परायण

(ङ) विनम्र

(च) संग्रह वृत्ति

(छ) व्यक्तिवादी दृष्टि-कोण

(ज) धार्मिक आचरण

तृतीय अध्याय :- कृष्ण चन्द्र टुडू की समकालीन परिस्थितियाँ

1. राजनीतिक स्थिति

2. सामाजिक स्थिति

3. आर्थिक स्थिति

4. साहित्यक स्थिति

चतुर्थ अध्याय :- संताली साहित्यकार कृष्ण चन्द्र टुडू की गद्य साधना

क. गद्यकृति

(अ) कहानी

1. कथावस्तु
2. पात्र-चरित्र
3. संवाद
4. परिवेश या वातावरण
5. शिल्प शैली
6. उद्देश्य

ख. नाटक

ग. निबंध एवं लेख

घ. लोक कथाओं का स्तरीकरण

पंचम अध्याय :- कृष्ण चन्द्र टुडू की पाँच श्रेष्ठ कहानियों का विशलेषण

1. तारा आञ्चार
2. साकोम
3. जान हापा
4. पे फुड़ू सासाडÛ
5. मित् बिता हासा

षष्ठ अध्याय:- कृष्ण चन्द्र टुडू की पद्य साधना

क. गीत

ख. कविता

सप्तम् अध्याय:- कृष्ण चन्द्र टुडू की रचना वैशिष्ट्य

क. काव्य भाषा

ख. बिम्ब विधान

ग. अलंकार

घ. रस विवेचन

ड. छन्द विधान

च. काव्य गुण

शोध-सार:- संताली साहित्य के विकास में कृष्ण चन्द्र टुडू का योगदान एवं स्थान

परिशिष्ट

(क) आधार ग्रंथों की सूची

(ख) संदर्भ ग्रंथों की सूची

(ग) साक्षात्कार की सूची

(घ) चित्रावली

(ङ) पत्र-पत्रिकाओं की सूची

नोटः- शोध प्रारूप में आवश्यकता होने पर आंशिक परिर्वतन किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक | **शोधकर्ता**

(डाॅ. अजीत मुण्डा)
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग
राम लखन सिंह यादव महाविद्यालय, राँची।
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

(दिव्या मुर्मू)
एम०ए० संताली
यू०जी०सी० नेट/जे० आर० एफ० (संताली)
स्नातकोत्तर संताली विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथों की सूची

1. ‘आदिवासी‘ बबुलाल मुर्मू , डाॅ0 डोमन साहु ‘समीर’: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 1999

2. ‘कुमार’ डाॅ0 राम, श्री गोबिन्द शरण लोहरा: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2021

3. ‘गिरिराज’ डाॅ0 गिरिधारी राम गौंझू, पीटर शांति नवरंगी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2005

4. ‘तिवारी’ डाॅ0 उमेश नन्द, आधुनिक नागपुरी साहित्य संदर्भ - प्रफुल्ल कुमार राय: एक मूल्यांकन, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2014

5. ‘माण्डी’ आदित्य, ‘ओनोलियाकोवाः जियन एनेम: जीवनी साहित्य, 2010

6. 'मुर्मू' डाॅ0 दुखिया, रघुनाथ टुडू: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, फाउंडेशन चेशायर होम रोड बरियातु, राँची, 1981

7. 'मुर्मू' रामचन्द्र, गुरू गोमके पण्डित रघुनाथ मुर्मू: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 'असेका' पछिम बंगला, 2004

8. 'साहु' डाॅ0 सुखदेव, डाॅ0 भुवनेश्वर अनुज: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2020

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. 'उपाध्याय' डाॅ0 कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड 56, रानीमण्डी, प्रयागराज-211003, 2019

2. 'कुमार' डाॅ0 विनय, संथाली भाषा, लोकगीत एवं नृत्य, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, 2014

3. 'किस्कू' फ्रांसिस, संताली सावहेंत् रेयाक् उनूरूम (भाषा साहित्य एंव व्याकरण), संपर्क पब्लिकेशन, 1985

4. 'टुडू' प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, सानताड़ी होड़ साँवहेंत् (संताली लोक साहित्य), संताली साहित्य परिषद, प्रोफेसर कृष्णा कुटीर राजदोहा, पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड, 2008

5. 'टुडू' प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, सानताड़ी पारसी उनुरूम (संताली भाषा परिचय), संताली साहित्य परिषद, प्रोफेसर कृष्णा कुटीर राजदोहा, पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड, 2005

6. 'टुडू' प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, यशोदा टुडू, संताली भाषा अन्वेषिका भाषा साहित्य एवं संस्कृति (सानताड़ी पारसी दिसाः उदुगाः), झारखण्ड झरोखा, राँची, 2011

7. ‘टुडू’ प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, सानताड़ी साँवहेंत् रेनाः ओमोनोम आर हारा (संताली साहित्य के उद्भव और विकास), संताली साहित्य परिषद, राँची झारखण्ड, 2012

8. ‘टुडू’ प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, संताली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, यश पब्लिकेशन, सुभाष पार्क, दिल्ली, 2018

9. ‘टुडू’ प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, आदिवासी समाज एवं संस्कृति, प्रोफेसर कृष्णा कुटीर, राजदोहा, पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड, 2021

10. ‘टुडू’ प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, संताली गद्य-पद्य संग्रह (सानताड़ी काथनी-गाथनी गादेल), संताली साहित्य परिषद, राँची, झारखण्ड C/o स्नातकोत्तर, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, 1985

11. ‘टुडू’ प्रो0 (डाॅ0) कृष्ण चन्द्र, संताली पद्य संग्रह (सानताड़ी गाथनी गादेल), बिहार आदिवासी अरूणोदय संघ, जुमाल, पश्चिम सिंहभूम एवं संताली साहित्य परिषद, राँची, झारखण्ड, 1985

12. ‘समीर’ डाॅ0 डोमन साहू, संताली लोक-कथाएँ, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नेहरू भवन, दिल्ली, 2021

13. ‘रूसिका’ माँझी रामदास टुडू, खेरवाल बंशा धोरोम पुथी, वेदान्त प्रेस, कोलकाता, लोकभारती प्रकाशन, 1882

14. ‘शर्मा’ देवेन्द्रनाथ, संताली भाषा व्याकरण एवं साहित्य, शिवांगन पब्लिकेशन, रातु रोड, राँची, 2015

15. ‘हेम्ब्रम’ डाॅ0 रतन, संताली लोकगीतों में साहित्य और संस्कृति, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, 2005

पत्र-पत्रिकाएँ

1. आहला (मासिक साहित्यक पत्रिका), प्रो0 दिगम्बर हाँसदा, करनडीह, टाटानगर, झारखण्ड, 1956

2. उमुल (मासिक साहित्यक पत्रिका), गिरिजल मुरमू, झाझिया, पुरूलिया, पछिम बंगला, 1978

3. जाहेरगाड़ (त्रैमासिक साहित्यक पत्रिका), प्रो0 दिगम्बर हाँसदा, करनडीह, जमशेदपुर, झारखण्ड, 1991

4. जुग सिरिजोल (मासिक साहित्यक पत्रिका), नाथिनियेल मुरमू, 1971

5. ढारवाः (सूचना पत्र), आॅण्ड्रे केम्पबेल, पुखुरिया मिशन, 1890

6. तेतरे (मासिक साहित्यक पत्रिका), महादेव हाँसदा, पुरूलिया, पछिमा बंगला, 1976

7. पछिम बंगला (साप्ताहिक पत्रिका), धीरेन्द्र नाथ बास्के, तथ्य ओ जनसंयोग, अधिकर्ता पछिम बंगला सरकार, 1971

8. पाँजा (समाचार पत्र), श्याम सी0 टुडू, दाबांकी, पोटका, झारखण्ड, 2007

9. फागुन (मासिक समाचार पत्र), मालती मुरमू, भुवनेश्वर, उड़ीसा, 2009

10. मरसाल (मासिक साहित्यक पत्रिका), सिहरी मुरमू, खेरवाल लिटेररी सोसाईटी, राजदोहा, पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड, 1941

11. सागेन साकाम (मासिक पत्रिका), खेलाराम माँझी, असेका, रायरंगपुर, उड़ीसा, 1965

12. सिली (मासिक साहित्यक पत्रिका), कलेन्द्र नाथ माण्डी, सिरिसगोड़ा, पुरूलिया, पछिम बंगला, 1981

13. होड़ होपोन रेन पेड़ा, एल0 ओ0 स्क्रेफसरूड, बेनागाड़िया मिशन, 1890

14. होड़ सोमबाद (साप्ताहिक पत्रिका), डोमन साहू 'समीर', सूचना एवं जनसंयोग विभाग, बिहार सरकार, पटना द्वारा साहित्य प्रेस देवघर, संताल परगाना, 1947